15

fnokLolu*

गुजरात के महान शिक्षाविद् और बाल शिक्षक गिजुभाई बधेका ने शिक्षा संबंधी अनेक प्रयोग किए। बच्चे की स्वतंत्रता और स्वालंबन में अटूट निष्ठा रखने वाले गिजुभाई बधेका ने 1920 में बालमंदिर की स्थापना कर अपनी निष्ठा को संस्थायी आधार दिया और अपने दैनिक व्यवहार और लेखन में इसकी सार्थक अभिव्यक्ति की। ऐसी ही एक अभिव्यक्ति उभरी कथा शैली में लिखी गई पुस्तक 'दिवास्वप्न' के रूप में। इस पुस्तक में पिटाई को लेकर कक्षा में बच्चों की बातचीत का एक अंश यहाँ दिया जा रहा है। अनुशासन के नाम पर बच्चे को दंडित करना बच्चे के तन और मन दोनों को ही आहत करता है। पिटाई बच्चे के मन में नकारात्मक भावनाएँ ही उत्पé करती है।

एक दिन पास के एक कमरे से एकाएक 'अरे बाप रे! मरा रे! मार डाला रे!' की आवाज़ आई। हमारे कान खड़े हो गए। मैं कहानी सुना रहा था। लड़कों का ध्यान बरबस उधर चला गया। मैंने कहानी बंद की और कहा,'' एक विद्यार्थी जाकर देख आए कि बात क्या है? कौन रो रहा है, किसलिए रो रहा है?'' एक लड़का देखकर आया और कहने लगा, ''उस कक्षा के जीवनलाल को मास्टर ने पीटा है।'' मैंने पूछा, ''क्यों?'' वह बोला, ''जीवन को भूगोल याद नहीं था।'' मैंने फिर पूछा, ''तो इसमें पीटने की क्या बात थी?'' मेरा एक छात्र बोला, ''जब कोई अपना सबक याद करके नहीं लाएगा तो और क्या होगा?''

मैंने कहा, ''लेकिन किसी को याद ही न रहा हो तो?'' दूसरा बोला, ''सबक तो याद होना ही चाहिए। न होगा तो मास्टर और क्या करेंगे? सज़ा तो देंगे ही।'' मैंने पूछा, ''लेकिन किसी को बार-बार रटने पर भी याद न हो तो?'' तीसरा बोला, ''तो भी मास्टर जी तो ज़रूर मारेंगे। वे और कर ही क्या सकते हैं? न याद होगा, तो मारेंगे, पीटेंगे, सज़ा देंगे।'' मैंने कहा, ''अच्छी बात है। बोलो, कौन-कौन मार खाने को तैयार है?'' सब बोले, ''जी नहीं तैयार कौन होगा?'' मैं बोला ''मैं तुम्हें सबक दूं और तुम याद करके न आए तो मुझे भी तुम्हें मारना चाहिए या नहीं?'' सब बोले ''लेकिन हम सबक याद करके ही आएगें।'' मैंने पूछा, ''तुम उसको रटो और फिर भी वह तुम्हें याद न रहे तो?'' ''तो क्या.... तो भी सज़ा मत दीजिएगा। मारेंगे तो लगेगी। हाँ, हमें याद न रहे तो आप फिर पढ़ाइएगा। हम फिर घोटा लगाएँगें'' लड़के बोले। मैंने कहा, ''खैर! अब हम कहानी शुरू करें?''

*गिजुभाई बधेका द्वारा लिखित पुस्तक *दिवास्वप्न* मूलत: गुजराती में सन् 1932 में प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक का हिंदी अनुवाद श्री काशीनाथ त्रिवेदी ने किया है। यह पुस्तक नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया दिल्ली से प्रकाशित है।

लेकिन लड़कों का मन तो आज उस जीवन लाल में लगा था। वे कहने लगे, ''देख लेना, जीवन तो ऐसा उस्ताद है कि बाद में शिक्षक को गाली देगा। दीवार पर उनकी तस्वीर लगाएगा और उनके नाम गालियाँ लिखेगा।'' मैंने कहा, ''जीवन को ऐसा नहीं करना चाहिए। शिक्षक के साथ ऐसा व्यवहार ठीक नहीं।'' सब कहने लगे, ''लेकिन शिक्षक भी तो उसे बहुत ही पीटते हैं।'' मैंने कहा, ''तो इसका कोई उपाय है?'' लड़के बोले, ''हाँ, उसको पीटना नहीं चाहिए।'' मैंने कहा, ''फिर सबक का क्या होगा?'' लड़कों ने जवाब दिया, ''जो सबक याद करके न आए, उसको पाठशाला में से निकाल दिया जाए। नाहक मारने से क्या फ़ायदा? यदि पीटने से विद्या आती हो तो लड़के पिटते तो रोज़ ही हैं न?'' एक ने कहा, ''अजी, जीवन का तो पढ़ने में मन ही नहीं लगता। उसे तो खरगोश पकड़ने का शौक है और ढोर (मवेशी) चराने का वह रसिया है।'' दूसरा बोला, ''भैया, जीवन तो मदरसे में भी पिटता है। बाकी बाहर तो वही सब लड़कों को पीटता है। हम सब उससे डरते हैं।''

मैंने पूछा, ''वह किस जाति का है?'' लड़कों ने कहा, ''जी, वह कोली जाति का है। उसके पिता जी सरकारी नौकर हैं और वे उसे जबरदस्ती पढ़ाते हैं। पढ़ाने के लिए उन्होंने एक शिक्षक भी रखा है।'' मैंने कहा, ''खैर, गोली मारो इसे। चलो, हम तो अपनी कहानी पूरी करें।'' कहानी खत्म करके हम उठे और इतने में घंटी लगी। मैं सज़ा और उसके परिणामों पर विचार करता-करता घर पहूँचा। मुझे तो किसी को सज़ा देना ही नहीं थी, इसलिए मैं अपने मन में निश्चिंत था।

❑❑❑